ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE
24, AKBAR ROAD, NEW DELHI
COMMUNICATION DEPARTMENT

Highlights of Press Briefing **18 October, 2020**

Dr. Abhishek Manu Singhvi, Spokesperson, AICC addressed media via video conferencing, today

डॉ. अभिषेक मनु सिंघवी ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि एक प्रकार से देखा जाए तो मेरा दुर्भाग्य है कि एक हफ्ते के अंदर मुझे एआईसीसी के मंच से आपके साथ बीजेपी के भ्रष्टाचार से लिप्त चेहरे को प्रमाणिक उदाहरणों के साथ, उन्हें वापस बताने के लिए आपसे दूसरी बार आमुख होना पड़ रहा है। पिछले हफ्ते हमने बात की थी कर्नाटक की, वहाँ के मुख्यमंत्री की और किस प्रकार से बेशर्मी के साथ खुल्लम-खुला एक खेल खेला जा रहा था, उसकी कहानी सुनाई गई थी आपको। उसके अंत मैंने कहा था कि ये एक और कड़ी है, मैं पिछले हफ्ते की बात कर रहा हूं, ये वो कड़ी है, उस श्रृंखला में कड़ी है, जिसमें गुजरात के पुराने उदाहरण आपको याद है पुत्र मोह के, कर्नाटक के विशेष कई ऐसी वारदातें हुई हैं, डायरी एंट्री का मैंने जिक्र किया था, लोकायुक्त रिपोर्ट की, बेल्लारी रिपोर्ट की, व्यापम की बात की थी, तो उसी एक प्रज्जवलित श्रृंखला के अंतर्गत बीजेपी ने जो मार्ग प्रज्वलित किया है, उसका एक और कैंडेड(candid) कैमरा पर स्वीकार किया हुआ प्रमाणिक उदाहरण लेकर आज हम आपके सामने आए हैं। इससे जाहिर है कि विधायकी को गिराने ले लिए भाजपा द्वारा खरीद-फरोख्त एक तरीका बन गया है। मोदी जी ने वास्तव में राजनीति और दुकानदारी का फर्क मिटा दिया है। हमारे पास एआईसीसी और वहाँ के जो मित्र हैं, वो आपको भेज देंगे वॉट्सअप पर, आप मान कर चलिए कि मुख्य रूप से 3 टेप हैं, जो मीडिया में हैं। आपकी आंख के सामने होंगे, आपके कान उसको सुन पाएंगे।

पहला, जो सबसे महत्वपूर्ण है, वो एक वहाँ के एमएलए साहब हैं, अक्षय पटेल साहब, मैं सिर्फ तथ्य दे रहा हूं, उसके बाद मैं आपको उसके निष्कर्ष और व्यापक मुद्दे हैं, वो बताऊंगा। ये किसी एमएलए के बारे में नहीं हैं, किसी प्रदेश के बारे में नहीं है, ये मुद्दे बहुत व्यापक है, इससे कहीं ज्यादा व्यापक हैं।

तो पहला उदाहरण हैं, एमएलए साहब, जिनका नाम है अक्षय पटेल। कुछ महीनों पहले तक लगभग फरवरी-मार्च तक हमारे साथ कांग्रेस में थे। वो इस्तीफ़ा देकर, छाती ठोक कर बता रहे हैं टेप पर कि पहली बात तो टिकट मिल गया है उनको और किस प्रकार से इस्तीफ़ा देने के लिए कई अलग-अलग जगहों से, दिशाओं से उनको 50-52 करोड़ रुपए की ऑफर आई हैं। ये टेप आपके सामने होगा। आपको भेजा जाएगा और अपने वर्चस्व को घोषित करके वो बता रहे हैं कि कितनी महंगी कीमत के वो व्यक्ति हैं, जिनके लिए इस प्रकार के 2019 के बाद उस पार्टी से जिसमें वो नहीं है, यानि एक ही पार्टी ऐसी है, केन्द्र की सत्तारुढ़ पार्टी और गुजरात की सत्तारुढ़ पार्टी।

दूसरे टेप में आप देखेंगे एक और एमएलए, वो भी हाल में इस्तीफ़ा देकर अब इस बार चुनाव में उतर रहे हैं, जो-जो उप चुनाव हो रहे हैं, आप जानते हैं कई सारे। उनका नाम है श्री काकड़िया और वो कह रहे है कि ये सुनिश्चित है कि इस्तीफ़ा करने के बाद कम से कम एक तो दोनों में से विकल्प होगा, या तो टिकट मिलेगा या पैसा मिलेगा। ये हुआ दूसरा टेप काकड़िया एमएलए के विषय में।

तीसरा है, एक प्रद्युम्न सिंह जाडेजा के विषय में, जो अब खड़े हो रहे हैं, वो भी कांग्रेस से निकले हैं, इस्तीफ़ा दिया है और अब एक अबडासा इलाके से बीजेपी का टिकट मिला है उनको। उन्होंने बताया है कि कटिबद्धता होती है, कमिटमेंट होती है, ज़ुबान होती है, जिससे कभी भी देने वाली पार्टी मुकरती नहीं है या तो टिकट मिलता है या पैसा मिलता है। जो बात दूसरे काकड़िया एमएलए ने भी कही है।

आपको पता है कि 8 ऐसे एमएलएज ने इस्तीफ़ा दिया था कांग्रेस से। आपको ये भी पता है कि उनमें से 5 को अब अभी निकट भविष्य में उप चुनाव हो रहे हैं, उनको टिकट मिला है बीजेपी से। जैसा मैंने कहा कि ये ना कांग्रेस के बारे में है, ना गुजरात के बारे में है, ना काकड़िया के बारे में है, ना अक्षय पटेल के बारे में है। ये 10-12 बहुत बड़े व्यापक मुद्दे उठाता है, बीजेपी के विषय में और मैं उनको अंकित कर दूं आपके समक्ष निष्कर्षों के साथ, मुद्दों के साथ। जो हमारे पूरे देश की अस्मिता के एक मूल रुप से उसके सिद्धांतों पर प्रश्नचिन्ह लगा देता है।

पहला, आज जो आपने देखा और जो मैं बोल रहा हूं, ये जिरह और बहस की बात नहीं है, आरोप- प्रत्यारोप के क्षेत्र में नहीं है। ये है प्रमाणिक चीज कैंडिड कैमरा में, ना मैं बोल रहा हूं, ना आप बोल रहे हैं, ये लोग स्वयं स्वीकार कर रहे हैं तिथियों के साथ, रकमों की बात हो रही है। इस केस में मैंने कहा अक्षय पटेल ने 50-52 करोड़ की बात की है, उसमें आरोप हमारा औपचारिक रुप से पहले से था, ये पूरी खबर है हमारे पास कि 16 करोड़ से ज्यादा इनको ऑफर मिले। वो व्यक्ति खुद कहता है कि अलग-अलग जगहों से 50 से 52 हुआ है, यानि हमारा आंकड़ा बहुत कम था। तो ये प्रत्यक्ष प्रमाण की बात है, ये कोई आरोप-प्रत्यारोप या संदेह की बात नहीं है

दूसरा, जाहिर है ये सब कुछ उस पार्टी के विषय में है जो सत्तारुढ़ है केन्द्र में और प्रदेश में।

तीसरा, आंकड़े विराट हैं, विशाल हैं। हम करोड़ों की ही बात ही नहीं कर रहे हैं, हम 50-52 करोड़ की बात कर रहे हैं।

चौथा, ये लिए रुपए या नहीं लिए, ये मुद्दा ही नहीं है, मुद्दा ये है ऑफर करने वाले या एक प्रस्ताव रखने वाले का सही चाल, चरित्र और चेहरा, उनकी क्षमता, विशाल क्षमता, उनकी असीमित लोलुपता सत्ता के लिए, जो उनसे ये करवा रही है। ये मूल मुद्दा है।

पांचवा, बीजेपी के नंबर वन सभी जानते हैं देश में, एक ही नंबर वन हैं। बीजेपी के नंबर वन एंड हाफ कह लीजिए, नंबर दो कह लीजिए, वो भी सभी जानते हैं, गुजरात से निकट संबंध रखते हैं, लेकिन आगे चलें तो बीजेपी के अध्यक्ष, बीजेपी के सभी वरिष्ठ नेता जब ऐसा हुआ है, लगभग 10-12 बार हुआ है पिछले 5 वर्षों

में, तो कहते हैं हमारा कोई रोल नहीं है। ये तो अंसतुष्ट लोग हैं, जो कांग्रेस या किसी और पार्टी को छोड़ते हैं, हम क्या करें। हमारा ठेका नहीं कि उनका ध्यान रखेँ। हमारा कोई रोल नहीं है, तो ये आपको हम उदाहरण दे रहे हैं, कैमरे पर वापस पाँचवीं, छठी बार, हमारा रोल नहीं है उसका उदाहरण। 50-52 करोड़ हमारा रोल नहीं है, 16 करोड़ हमारा रोल नहीं है, कटिबद्धता, टिकट देना या पैसा देना हमारा रोल नहीं है। ये ऊपर की आकाश की जो बिजली है, उस कारण से ये एमएलए अचानक से इस्तीफ़ा दे रहे हैं। वे चाहते हैं कि आप घास खाते हुए आम आदमी इसका विश्वास करें।

छठा, ये महत्वपूर्ण संवैधानिक मुद्दा है। आप चुनावित करते हैं हमको 5 वर्ष के लिए, जनादेश होता है 5 वर्ष के लिए। बीजेपी चुनाव के 5 वर्ष के जनादेश को बनाती है 2 वर्ष, 3 वर्ष। उप चुनाव करवाती है क्योंकि आपसे इस्तीफ़ा दिलवाती है। ये सैंकड़ों इस्तीफ़े हैं, ये सिर्फ गुजरात में नहीं हो रहा है, सब जगह हो रहा है। मध्यस्थ में चुनाव करवाती है, संवैधानिक जनादेश को अवरुद्ध करती है और मूल रुप से जनादेश को नकारती है। Nullification of democratic mandate. कृत्रिम रुप और भ्रष्टाचार के कृत्रिम रास्ते द्वारा वो एक नया कृत्रिम जनादेश बनाती है।

सातवाँ, जिसको 84-85 में हमारे संसद ने दल-बदल विरोधी कानून बनाया था, इसको आप 10वें शेड्यूल के नाम से जानते हैं। जो कम से कम 10 उच्चतम न्यायालय के निर्णयों ने बार-बार कहा है कि ये संवैधानिक पाप है, Constitutional Sin, इसलिए इस कानून की बहुत ज्यादा महत्ता है। उसको आप निरर्थक बना रहे हैं, उसका मज़ाक बना रहे हैं, उसकी धज्जियाँ उड़ा रहा है, क्यों - क्योंकि इस्तीफ़ा देता है व्यक्ति। 100 के बहुमत को कृत्रिम 90 की बहुमत बनाता है। हाउस की स्ट्रैंथ को कम करता है, फिर वही व्यक्ति को टिकट मिलता है। वही व्यक्ति कई बार, जो अभी मध्यप्रदेश में हुआ, टिकट मिलने से पहले मंत्री बनाया जाता है, चुनाव तो बाद में होते हैं, आप जानते हैं मध्यप्रदेश में तो करीब-करीब 6 महीने बाद हो रहे हैं चुनाव। तो उस अवधि में आप मंत्री बन जाते हैं और फिर उस मंत्री पद के आधार पर चुनाव लड़ना आवश्यक होता है 6 महीने के अंदर, लड़कर जीत कर वापस आते हैं और पैसे का इतना नंगा नाच होता है कि ये संवैधानिक रीति, रिवाज, सिद्धांत, कानून की धज्जियाँ कौन उड़ा रहा है - एक पार्टी, एक सत्तारुढ़ पार्टी।

आठवां बिंदु, ये मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं, ये भी गुजरात तक सीमित नहीं है। यही कहानी आपने देखी है मणिपुर में, यही कहानी देखी आपने गोवा में, यही कहानी आपने कर्नाटक में बारंबार देखी है, जब पहली बार मैं आपके सामने पेश हुआ था रात के 2 बजे कर्नाटक के मामले में, तब भी यही कहानी थी। यही कहानी आपने हाल में महाराष्ट्र में देखी है, हरियाणा में कृत्रिम बहुमत बनाने की और अलग-अलग पार्टियों को लोलुपता से, लालच से लाने की यही प्रक्रिया देखी है।

नौवां, आप ये सब कब कर रहे हैं - कोरोना के दौरान। आपके पास समय है इतने बड़े-बड़े विशाल आंकड़ों वाले रुपयों का, बातचीत, लेन-देन करने का, दुकानदारी करने का? कोरोना में जो आप काम कर रहे हैं, जिस हालत में आपने भारत को पहुंचाया है, वहाँ आपकी ऊर्जा और आपका फोकस नहीं है। देश की आर्थिक स्थिति को जो आपने धराशायी कर दिया है, वहाँ आपका फोकस नहीं है। आपका फोकस इस प्रकार की दल-बदली में है। आज ही ग्लोबल हंगर इंडेक्स प्रकाशित हुआ है, उसका आंकड़ा ही बहुत निराशाजनक नहीं है सिर्फ, जो कि हमें 107 देशों में 94 स्थान पर डालता है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स में वैश्विक रुप से जो

भूख की रैंकिंग है, उसमें 94 out of 107, लेकिन उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है कि 2014 में ये आंकड़ा क्या था - 2014 में ये आंकड़ा 63 से बढ़कर 55 हो गया था। तो आप इसको 2014 से 2020 में 55 से 94 पर ले आए हैं, क्यों - क्योंकि आपका फोकस है इन कारनामों में, इन काले कारनामों में। सबसे महत्वपूर्ण है सिद्धांत की बात। ये पूर्णतया गणतंत्र को नकारने की प्रक्रिया है, गणतंत्र को अपमानित करने की प्रक्रिया है।

तो जैसा कहा जा सकता है कि हर तरफ खरीद हो रही है विधायिका की, ये गुजरात में हल्ला है। भाजपा ने, ये लोकतंत्र नहीं, किसी सेठ का गल्ला बना दिया है इसको। कहाँ है हमारे प्रखर और मुखर प्रधानमंत्री, कहाँ हैं वो गूँज कि 'ना खाऊंगा, ना खाने दूंगा'? कहाँ है चौकीदार, जिनकी नाक के नीचे 50 और 52 करोड़ की बातें हो रही हैं?

जैसा कि मैंने पिछली हफ्ते अंत की थी अपनी बात, मैं उसी बात से अंत करुंगा और मैं इस विश्वास से अंत करुंगा कि मांग मेरी वही होगी, लेकिन मांग का उत्तर तक नहीं मिलने वाला है, मांग तो क्या मिलेगी इस देश में, ये दुर्भाग्य है इस देश का।

पहला, सीटिंग उच्चतम न्यायालय का और कम से कम मुख्य न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय की जांच व्यापक, निष्पक्ष, स्वतंत्र।

दूसरा, तुरंत एफ़आईआर, न्यूनतम रुप से प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट के अंतर्गत, इस ख़रीद-फरोख्त के विषय में।

तीसरा, उसके अंतर्गत एक स्वतंत्र फौजदारी क्रिमिनल इनवेस्टिगेशन। ये सिर्फ शब्द नहीं हैं, ये मांग है, देश की वेदना है, लेकिन जहाँ लोग आँख, कान औऱ मुँह बंद करके बैठे हैं और इसमें लिप्त हैं, मुझे आशा नहीं है कि इसमें कुछ भी एक्शन होने वाला है।

Dr. Abhishek Manu Singhvi said- Friends, it is my misfortune and the manner of speaking that I am before you within one week to bring you yet another example and it is the misfortune not only of mine, but, also of this county's that I am here before you within a week with yet another example of the gross corruption and time again, last time validated by WhatsApp's conversations, documents, account statements, this time validated by candid camera, by statements, whose taped, whose video recordings are in public domain, here with the AICC and they will all be shared on your WhatsApp groups shortly after the Press Conference.

At the end of the last week's press conference, remember what I had said, that this Karnataka CM example is only one in a chain of enumerable, diverse examples. I had in-fact indicated the son's rise, not the normal sun's rise in the east, but, a special son's rise in Gujarat, completely close in corruption which has gone unanswered, un-investigated now for years. I had talked about the diaries of Karnataka.

You know, the kind of level of scrutiny, they have suffered, zero. I had talked about Lokayukta report about the corruption ridden earlier term of the

present Chief Minister of Karnataka. I had talked about VYAPAM and many other examples. Today in that same chain, you have yet another example as I said of candid camera coming from Gujarat. The legislature, it is clear from these proves, has become a pawn, a business play thing for the BJP, which aggressively indulges in the 3Ts. The 3Ts being Trading, Trafficking and Transaction-ing with MLAs and legislators. The tapes I mentioned and I will come to the larger conclusions and the larger issues, this is not about the narrow issue of tapes or about Mr. 'A' or Mr. 'B', but, let's get those facts clear are three major tapes:-

The first is about one prospective MLA seeker Mr. Akshay Patel, who was with us till earlier in 2020. He resigned and he is on candid camera before you saying, boasting about the great value attached to his persona, saying that he has received diverse offers in the recent past from a party other than that which he left in the region of Rs 50-52 crores. It is all in front of you. It is unchallengeable, unexceptionable and I must add that this has been theirs with last night and we haven't heard the squeak of a denial, of any credible denial by anyone till now.

The second is a tape from Mr. Kankariya, a similar MLA, a similar resignee from the Congress, who is again seeking ticket, who makes it very clear candidly that resignation mean at least one of the two alternatives, we are reassured and confident, either money or a BJP ticket, usually both.

And third is, yet in other third MLA of the same ilk, resignee now contesting from Abdasa on BJP ticket called Pradyumansinh Jadeja, who talks about the commitment, which has never disappointed if resignations occur pursuant to a commitment and as I start on the larger conclusions, let me remind you that 5 of the 8 resignees from the Congress have got tickets in the near forthcoming by-polls, but, as I said friends, it is a much larger issue, fundamental issue to our democracy, to our polity, to our morality, to our conscience and let me give you 10-12 very quick points, outlining those larger issues:-

1. Of course, is that what we are not talking, is not of allegation, not in the realm of allegation, not in the zone of allegation and counter allegation or suspicion, It is proved by acceptance, by boast on candid camera- proof positive.
2. It is clear that the party we are talking about is the ruling party both in the state and in the centre.
3. The figures, we are talking about are not ordinary figures. These are mammoth figures, Rs 50-52 crores, is well beyond the official allegation of the Congress in one of the case is some weeks ago that it had come to our knowledge that Rs. 16 crores was offered. We are now talking by the person who was offered, who claims Rs. 50-52 crores.

4. The issue at all is not whether he accepted it or took the bribe or not. Obviously, those speaking have denied it. The issue is the true colours of the offeror, the true moral constitutional and legal level, political level at which the offeror is functioning, namely the BJP. The true issue is about the limitless capacity of this party to offer money. I repeat- limitless capacity, matched only by their limitless greed for power by hook or by crook, more by crook, less by hook.

5. We have this great argument happening every two weeks across the country by the BJP with an air of injured innocence and false indignation, we have nothing to do with this, we have never heard it, we don't know of these people, we have no role to play in it, what should we do if by dashes of lightening from the skies by divine command, different MLAs in different states start resigning, to be with the BJP, we have no role to play in it. Well, this 'no role argument' has just been priced before you in these video tapes at Rs. 50-52 crores. This 'no role argument' has been punctured time and again and this is yet another example.

6. My sixth point is yet a larger point, you, the people of India elect legislators for a minimum of five years. The BJP ensures that elections that mandate, which is the constitutional, democratic mandate is actually a mandate of only 2 or 3 years, It is curtailed, interrupted, obstructed to 2-3 years by 'A' large sums of money, 'B' large number of resignation, 'C', re-offering of ministerships and 'D', offering of MLA tickets. This is the political morality practiced by the ruling party at the center and in the state of Gujarat. You create an artificial majority, an artificial majority is negation of the democracy, which functions on majority, true majorities and you do it by the naked use of monetary power.

7. My seventh point is a still larger point, which is as you recollect the unanimous view, virtually of parliament almost hundred percent in 1984-85, when the 10th schedule was enacted in the Government of Shri Rajiv Gandhi and it was enacted by those debates repeatedly referring to a constitutional sin, thousands of legislators changing sides and 20 judgments or 10 judgments after that date have repeatedly used the phrase constitutional sin, which is the basis of the 10th Schedule. Here, you have a ruling party, blowing the 10th Schedule to smithereens, mocking it, derailing it, nullifying it, making a joke out of it. They are following this principle as I said- 10th Schedule be dammed, how does it matter whether you adjudicate, whether 'A' has defected or not, whether it has disqualified or not, simple route, simple 'Jugad' - Resign, take money, refight for MLA, continue as minister etc etc.

8. My 8th point is that this is happening all over every day in diverse situations and diverse states. Please, don't think of where there is an

exception, it is the rule; it is the absolute nature of the political party called the BJP. It has happened under your noses in Goa, it has happened more than three times in Karnataka including the mid night hearing at the Supreme Court involved huge similar allegations of resignation and money changing hands. It was attempted recently in a big way in Maharashtra, few months ago. It was done in Manipur, the list is endless. It is now being done for even by-polls in Gujarat.

9. Is it not a matter of shame that all these energies, all these faculties, all these resources are being expended in the midst of Corona to fight the Chinese, or to fight Corona, or to fight such things in elections to create artificial majorities. What are you doing to combat the complete destruction of the economy? A 10% erosion of GDP. The world's smallest so called stimulus fiscal package, but, your energies are on issues of Rs 50-52 crores for one MLA, what can the country expect? I was devastated to read just today a very simple and a very telling and a devastating statistic, the other one came two-three days ago which is pushing us below Bangladesh on per capita GDP, but, this one says that the Global Hunger Index, we are today at 94/107 countries. This figure is less important than the figure that in 2014, we had come up to 63 from 55 so you have brought us down from 55 to 94. Who was fiddling, while India was burning? Prime Minister Modi, Home Minister Shah, the entire leadership team of the BJP was focusing or at least allowing these things under their noses.

Friends, let me end with strong, logical and relevant demand, but, with the equal reassurance that we will get eloquent silence from our most remarkable, orator oriented Prime Minister. We will get no response, we will get no action but, it is my duty to repeat our demands. The demands are:-

1. A Supreme Court sitting judge inquiring into this scam or at least a sitting Chief Justice of a High Court at the minimum.
2. Immediate registration of a Prevention of Corruption Act, FIR and related sections of the Indian penal codes on the criminal sides.
3. A swift comprehensive investigation, because, it is very clear that the BJP has proved, as I said, it's true face which is running these things virtually like a dictatorship on the basis of 3 As - Authoritarianism, Autocratic Approach and Absolutist approach. They have eliminated the distinction which means 'Dukandari' as I said in the Hindi version and political fighting of battles.

एक प्रश्न पर डॉ. सिंघवी ने कहा कि कोई भी संविधान, कोई भी उच्चतम न्यायालय, कोई भी सिद्धांत, कोई भी सीमा ऐसे जो रीति-रिवाज, जिसे वो अब हमारी राजनीति में ले लाये हैं, उनको सफल होने नहीं दे सकती, जब तक कि आपके अंदर एक मौलिक और एक मानसिक प्रवृत्ति नहीं है, जो सिद्धांत के आधार पर है, जो मोरल है। संवैधानिक मोरेलिटी संविधान के अक्षर से बड़ी होती है। कोई भी कानून है, उसको जुगाड़

करके अगर आप कटिबद्ध हैं एक सत्तारुढ़ पार्टी के आधार पर, उसको सर्कमवेंट(circumvent) करने के लिए, उसकी धज्जियाँ उड़ाने के लिए तो ये मान कर चलिए कि कोई कानून उससे बचेगा नहीं। हाँ, ये जरुर होगा कि अंततोगत्वा काफी आपको नुकसान पहुंचाने के बाद जनादेश बदलेगा और आपको भी उसी धज्जियों के आधार पर बाहर फैंका जाएगा। हमारे निर्माताओं ने जो दल-बदल कानून बनाया था, वहाँ कभी ये नहीं सोचा था कि पार्टियाँ इस्तीफ़ा ही नहीं करवाएंगी, जिस व्यक्ति ने इस्तीफ़ा किया है, इस्तीफ़ा करने से जो गिरावट होती है सत्तारुढ़ सरकार के पास, आप जानते हैं इस्तीफ़ा करने से आंकड़े बदलते हैं, हाउस का स्ट्रैंथ बदलता है, एक सरकार गिरती है। उस सरकार के गिरने के तुरंत बाद कुछ चंद क्षणों में उन्हीं व्यक्तियों को वापस मंत्री बनाया जाएगा, जो कि चुनावित नहीं है उसमें और फिर वो मंत्री 6 महीने के अंदर वापस चुनावित हो जाते हैं। तब तक इस्तीफ़े के आधार पर ना डिस्क्लाफिकेशन की आवश्यकता है दल-बदली कानून में और ना कोई और दंड हो सकता है उनको, सिर्फ चुनावित होने का वापस उनको एक अधिकार क्षेत्र है, जो हो जाता है 6 महीने में। तो इसके लिए मैंने लिखा है और ये भी आवश्यक है कि हम कानून में दो-तीन संशोधन भी लाएं कि जो व्यक्ति इस्तीफ़ा देता है, वो ना मंत्री पद होल्ड कर सकता है, ना वापस चुनाव लड़ सकता है कुछ महीनों के लिए। लेकिन वो कौन लाएगा कानून में बदलाव, वही लोग जो इसकी धज्जियाँ उड़ा रहे हैं। आपको लगता है कि वो कानून में ऐसा बदलाव लाएंगे और अगर लाए भी तो मैंने आपको बड़ा एक सरल तरीका बताया है उस लूप होल को प्लग करने के लिए, लेकिन आप समझते हैं कि मेरी क्षमता से कहीं ज्यादा जुगाड़ नहीं उन लोगों का, उसमें भी निकाल लेंगे कोई तरीका। तो इसलिए ये एक बात है मौलिकता की, एक मोरेलिटी की। असली इसका उद्देश्य है बीजेपी का सही चाल, चेहरा और चरित्र को परिलक्षित करना।

एक अन्य प्रश्न पर कि ऐसे में क्या माना जाए, क्या लोकतंत्र का इतना बड़ा सिस्टम सत्ताधारी दल के आगे हेल्पलैस हो गया है? डॉ. सिंघवी ने कहा कि हमारा संविधान, हमारे देश और हमारा गणतंत्र ऐसे व्यक्ति जो बोने हैं, ऐसी पार्टियाँ और उनके ऐसे प्रयत्नों से कहीं बड़े ज्यादा हैं। इससे कहीं बड़े आघात सहन किए हैं, मैं ये नहीं कह रहा हूं कि इस आघात से नष्ट हो जाएगा वो गणतंत्र, हाँ, छोटा होगा, टूटेगा, उसको नुकसान होगा, दर्द होगा और अंतिम रुप से हम क्या कर सकते हैं? हमारा विपक्ष में रोल है आपके जरिए ये पहुंचाना जनता में और जनता में वो आक्रोश पैदा करना जिससे जनादेश बदलेगा, यही गणतंत्र की सीमा है। मैं आपकी गर्दन पकड़ कर गणतंत्र को नहीं बदल सकता है। इसका मतलब ये नहीं है कि तुरंत इस पर कोई बदलाव नहीं हो रहा है या तुरंत इसका हल नहीं निकल रहा है, उसका मतलब ये नहीं है कि हमें आवाज़ नहीं उठानी चाहिए या उसका मतलब ये भी नहीं कि आपको निराश हो जाना चाहिए, क्योंकि हर ऐसे एक्ट से कहीं ना कहीं एक संदेश जाता है, जो हर जनता के व्यक्ति का जिसका एक अधिकार क्षेत्र है वोट देना, उसके पटल पर छप जाता है और जब उसका मस्तिष्क, उसका समय आता है वोट करने का, तो वो उसको एक्सरसाइज करता है।

एक अन्य प्रश्न पर कि बीजेपी ने श्री शशि थरुर की एक स्पीच को लेकर कांग्रेस पार्टी पर जो आरोप लगाया है, उस पर क्या कहेंगे? डॉ. सिंघवी ने कहा कि बीजेपी की पुरानी टेक्निक है, ये घिसी पिटी हो गई है, ये पुरानी हो गई है। ये बार-बार आपको अपने राष्ट्रवाद को अपने हाथ की ऊंगली में पहन कर चलकर,

उसकी घोषणा करने के लिए प्रवोक (provoke) करते हैं और एक बार प्राथमिक रुप से अच्छा भी लगता है सुनने वाले को कि ऐसा हो रहा है, ये अच्छे जुमले हैं जो आपने बोले हैं, लेकिन हर आदमी घास नहीं खाता है, वो सोचता है और दो क्षण सोचने के बाद उसको याद आता है कि अगर कोई, और मैं ना शशि थरुर की बात कर रहा हूं, ना किसी एक व्यक्ति की बात कर रहा हूं, अगर आपके पड़ोसी देश में कुछ अच्छा हो रहा है, जो आपको पीछे धकेल रहा है और आपको उसके आगे होना चाहिए, उसका आप जिक्र करते हैं, अगर कल, मैं इस उदाहरण की बात नहीं कर रहा हूं, अगर कल हंगर इंडेक्स में वो ऊपर हो जाए और आप 94 रहें तो हम कहें कि पाकिस्तान जैसे असफल देश 55 हो गए हैं हंगर इंडेक्स में और हम इतने पीछे हैं, तो आप जवाब ये देंगे कि पाकिस्तान में जाकर चुनाव लड़ें, लाहौरी, ये जो बोल रहे हैं लोग, ये आपको ये दिखाने के बोल रहे हैं कि ऐसे छोटे देश, ऐसे देश जो हमारे मुकाबले में कुछ भी नहीं है, अगर वो कुछ मुद्दों पर आगे बढ़ सकते हैं, तो आपकी सुधि, एक मानसिकता को जगाने का ये प्रयत्न है। उसका उत्तर ये नहीं है कि आपके राष्ट्रवाद को चुनौती दी जाए। तो जैसा मैंने कहा कि जुमलों में इस पार्टी का कोई मैच(मुकाबला) नहीं है, मैं बिल्कुल स्वीकार करता हूं। लेकिन जुमले 2-4 सैंकड तक रहता है, उसके बाद हर आदमी के अंदर दिमाग भी होता है, जैसे मैंने कहा कि बीजेपी अगर सोचती है कि सब घास खाते हैं, तो ये बात सही नहीं है। इसलिए उस लॉजिक और उस दिमाग के आधार पर आपको मालूम पड़ जाएगा कि जो भी ऐसा कहते हैं वो पाकिस्तान की बड़ाई नहीं कर रहे हैं, वो कह रहे हैं कि भारत को उस क्षेत्र में कहीं आगे होना चाहिए।

On a question about BJP's allegation on Dr. Shashi Tharoor's remarks on India's Covid response, Dr. Singhvi said- the BJP has always responded to substance, to pointed facts with Jumlebazi. The BJP has always believed in rhetoric not substance. Yes, it does have some times prima facie validity. It catches you by the eyeballs or by the ear buds when you hear it, but, within seconds, logic takes over and tells you how empty a rhetoric the BJP is indulging with. If somebody is raising a particular achievement or pointing to a particular area of activity in which you are laggard in India and to call that person, someone who should stand for elections from Pakistan, I think, is to ridicule the debate, is to diminish us as the democracy. All that has been done as to point out that you are a far stronger or far bigger or far more capable country and yet you should not be lagging behind in this parameter. For example, if we are speaking from the last two days, note a possible excess of GDP per capita from Bangladesh in comparison to India, do you think, the right response to that has to say that Singhvi should go and stand from Dhaka and not be in the Rajya Sabha of India. These are responses, which might have as I said short lived, few seconds' utility, but, they actually show the hollowness of your intellectual ability to deal the areas, where you are completely a failure.

गृह मंत्री अमित शाह जी द्वारा एक निजी चैनल को चीन को लेकर दिए इंटरव्यू के आधार पर पूछे एक अन्य प्रश्न के उत्तर में डॉ. सिंघवी ने कहा कि पहला जवाब है, जो मैंने आज ही ट्वीट किया था, मैंने कहा था "Thank god for small mercies. When asked about #Bangladesh reporting

better per capita GDP than #India in near future, I half expected #BJP leaders, top brass & spokespersons to say that the fault lies with #IndiraGandhi for creating #Bangladesh about 50 years ago!" ये बीजेपी का नोर्मल रिएक्शन होता है, वैसा ही रिएक्शन आप देख रहे हैं। एक मिनट आप मान लीजिए और मैं बिल्कुल नहीं मानता, लेकिन मान लीजिए कि ये हुआ, वो हुआ 62 में, 65 में और 71 में, आप और हम बात कर रहे हैं 2020 की। मान लीजिए कि हाँ, माननीय गृह मंत्री आप सही हैं, क्योंकि आप, आपका मंत्रालय, माननीय प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री का मंत्रालय कोई तथ्यों को शेयर नहीं करता विपक्ष से, इसलिए हमारा संज्ञान काफी सीमित है। उसके बाद जब हम आपसे प्रश्न पूछते हैं तो आप तथ्यों पर नहीं बताते पैंगोंग त्सो के बारे में, गलवान के बारे में, उस तारीख और इस तारीख के बारे में, अहमदाबाद के झुले के बारे में, महाबलीपुरम की सैर के बारे में, आप बात करते हैं 62, 65 और 71 के बारे में। कम से कम इस गणतंत्र में आप जवाब तो दीजिए, क्या ये जवाब है किसी रुप से और अगर 10 यूनिट क्षेत्र गया 62 में, जो मैं नहीं मानता, उसके कई और पहलू हैं, तो क्या वो तर्क है आज 2020 में 5 यूनिट क्षेत्र देने का चीन का?

On another question about an interview given to a private channel by the Home Minister Shri Amit Shah, Dr. Singhvi said- The answer to this is in two parts, I had tweeted today morning, a tweet which said- "Thank God for small mercies". When the BJP learnt that there are international un-connected independent reports, which published about possibly Bangladesh exceeding per capita GDP of India, I said- "Thank God for small mercies that they are not saying that this is happening because Indira Gandhi liberated Bangladesh in 1971". That is the normal reaction of the BJP. It is in the same line that you are quoting to me Hon'ble Home Minister's reaction. For a minute let us assume that this or that happened in 1962-65-71. Question is, how does it have any relevance to the questions being asked by the political party of the country in 2020. And Yes!, Hon'ble Home Minister, you are right, we don't have enough information because it is you and you include the Defence Ministry, the PMO and your Ministry, which does not share information with us. Which believes that the only Indians and the only nationalists are those in the power and those who are in the opposition are not sufficient nationalists to be taken into participatory governance even on national security issues.

So, therefore, if you don't have knowledge, you still have to answer in a democracy, the media as to what is happening, be it in the Pangong Tso or be it in Galwan or be it in Chushul. This country stands behind our Jawans, behind you, but the point is, the answer cannot be that if 10 units were lost in 1962 and certainly there are many more facets of 62, I don't want to get into those details today, then you are excluding a loss of five units today in 2020 that would be turning logic on its head and making a mockery of Indian democracy, which is what you are doing.

एक अन्य प्रश्न पर कि उत्तर प्रदेश में फैली व्यापक अराजकता पर कांग्रेस क्या कहेगी? डॉ. सिंघवी ने कहा कि ये अत्यंत दर्दनाक है, मैं बिल्कुल नहीं चाहता हूं राजनीतिक पहलू पहनाना, लेकिन ये पूरे देश के लिए शर्म से माथा झुकाने वाली बात है। हाथरस को छोड़िए, बलिया को छोड़िए, लखीमपुर खीरी को छोड़िए, आप एक व्यापक आंकड़े देखें जो झूठ नहीं बोलते, जो राजनीति नहीं है। हम शायद निकट भविष्य में अलग से आपसे प्रेस वार्ता लेंगे उस विषय में। आज ही एनसीआरबी, जो देश का सबसे बड़ा क्राइम स्टैटिक्स ब्यूरो हो, राष्ट्रीय औपचारिक, उसने प्रकाशित किया है, एक बड़ा दुर्भाग्पूर्ण लेकिन रोचक आंकड़ा, जो कम तबके की कम्यूनिटी है विशेष रुप से एससी, एसटी, उनमें 2014 और 2019 के बीच में 19 प्रतिशत उनके प्रति जो फौजदारी इंसिडेंट्स हुए हैं, वो बढ़े हैं, ये एक आंकड़ा है। दूसरा आंकड़ा, सबसे ज्यादा ये बढ़े हैं ये उत्तर प्रदेश में, मेरे पास फीगर भी हैं, 38 हजार से 45 हजार हुए हैं ऑल इंडिया बेसिस पर और यूपी का आंकड़ा याद नहीं है, प्रकाशित है 12 हजार के आस-पास। एससी सबसे ज्यादा प्रताडित हुए हैं उस प्रदेश में और ये सब उदाहरण हैं लखिमपुर आज है, हाथरस परसों है, बलिया तरसों हैं और उसके बाद आप देख रहे हैं कि उच्च पदाधिकारी उस सत्तारुढ़ पार्टी के उसका समर्थन कर रहे हैं। अभी आपने क्या देखा बलिया में, बीजेपी के जो माननीय वरिष्ठ लोकल नेता है, वो कहते हैं कि इसने सेल्फ डिफेंस में किया है, इसकी कोई गलती नहीं है। खड़े-खड़े किसी को गोली मार दी गई भरी मार्केट में। हाथरस में मैं मर्डर की बात सिर्फ नहीं कर रहा हूं, खून हुआ, उसकी नोर्मल तहकीकात होती है, सीबीआई की बाद में हुई, विलंब हुआ, लेकिन जो आपने देखा, वो कहीं भी देश में नहीं देखा है कि आप किसी को जला देते हैं, दफना देते हैं, खत्म कर देते हैं रात में, अनुमति नहीं लेते हैं और जो विक्टिम है, उसके परिवार को घरबंदी में, नाकाबंदी में डाल देते हैं, ना कि अभियुक्त को, जिसको 4-5 दिनों तक आप पकड़ नहीं पाते हैं। तो ये एक दुर्दशा है और इसको हम बार-बार उठाते रहेंगे, देश इससे शर्म से भरा हुआ है। आप इस पर राजनीति खेलते रहिए, लेकिन मैं समझता हूं कि जो आक्रोश है, उसको आप समझ नहीं रहे हैं, देश के जनादेश के।

On another question that you are questioning the role of Yogi Adityanath as a CM of UP and the lawlessness in the state, but, despite that he is the most sought after leader for campaigning in Bihar not only by BJP, but, by JDU also, so how do you see this, Dr. Singhvi said- This proves my point. Normally, the ones which give the most divisive, incendiary, inflammatory, provocative speeches are the ones, most sought after star campaigners in the BJP. This only proves my point. Secondly, it has no relation to mis-governance in UP and exaltation to star status within your party. It shows the way that BJPs mind works. The more you misgovern, the higher star status you have as a campaigner. Thirdly such people who divide and rule, who provoke and rule, who inflame and rule are actually treated as prized possessions, that is the true character of the party, we are talking about.

Sd/-
(Dr. Vineet Punia)
Secretary
Communication Deptt,
AICC